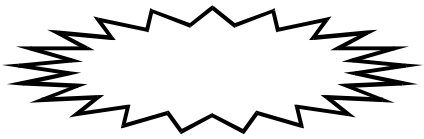
धर्म जीवन

फरवरी 2007

- नया वर्ष
  - पैतृक दर्द
    - माता के लिए श्रद्धांजली
      - वे ही मुखिया हैं
        - बच्चों का फर्ज़
      - सिर्फ मां
    - अध्यात्मिक उन्नति की कामना का पत्र
  - शुभ संग्राम
- चण्डीगढ़ में माता पिता दिवस



वैसे तो प्रत्येक दिन ही मनुष्य की ज़िन्दगी में नया है, परन्तु फिर भी पहली जनवरी से हम नये वर्ष में प्रवेश करते हैं। नये वर्ष को बहुत हर्षोहल्लास से मनाया जाता है, बेशक पश्चिमी सभ्यता के रंग में रंगे हमारे भारतवासी अब शराब और शबाब से इसको मनाकर अपने आपको आधुनिक दिखाने का दम भरते हैं, जो हमें उन्नति की ओर नहीं अवनति की ओर ले जा रहा है।

यदि हम नये वर्ष के लिए कुछ अच्छे संकल्प लें, कुछ बीते वर्ष में अपने में रही कमियों का लेखा जोखा करें, तो नये वर्ष को सफल बनाने का प्रयास कर सकते हैं।

साधारणत: हम अपने स्वार्थ के लिए जीते हैं। यदि हम यह संकल्प लें कि आने वाले वर्ष में हमने किसी एक बच्चे के जीवन को संवारना है, उसके रहन सहन, उसकी शिक्षा की ज़िम्मेवारी लेनी है, तो न केवल उस बच्चे की जिन्दगी संवर सकती है बल्कि आपके भले का मार्ग भी खुल सकता है। पढ़ाई के भिन्न अगर बच्चे की आदतों को सुधार सकें तो और भी नेक काम होगा। इसमें कुछ आपकी शारीरिक शक्तियां, कुछ मानसिक शक्तियां खर्च होंगी, परन्तु साथ-साथ कुछ कुछ धन का त्याग भी करें। हम अपने आप पर सारा दिन खर्च करते हैं, परन्तु यह नहीं सोचते कि समाज के निम्न वर्ग की ओर भी हमारी कोई ज़िम्मेदारी है। आपके पास यदि घर में कोई काम करता है, कोई ड्राईवर है, उनके बच्चों को पढ़ाने में, उनकी फीस देने में, कभी उनका मनोरंजन करवाने में सहायता करें। यह करके जो आपको सन्तुष्टि मिलेगी, उसको संभोग करके ही आप अन्दाज़ा लगा सकते है।

दूसरा संकल्प हम अपने व्यवहार को बदलने का कर सकते हैं। हमारा अंह और स्वार्थ हमें अन्धा बना देता है। अपने सेवाकारियों की सेवाएं याद रखने के स्थान पर हम उनकी छोटी-छोटी गल्तियों को भी नज़र अन्दाज नहीं करते। अपने सेवादारों को महीने भर में कुछ वेतन देकर हम उन्हें अपना गुलाम समझते हैं। मैं तो यह अनुभव करती हूँ कि उनकी ही बदौलत हम अपने बुढ़ापे को इस कदर आराम-दायक ढंग से गुज़ार रहे हैं। साधारणत: बच्चे आजकल अपने अपने स्थानों पर दूर रहते हैं। वह यदि नेक और कृतज्ञ हैं तो वह धन से सहायता कर सकते हैं, परन्तु प्रतिदिन की आपकी शारीरिक आवश्यकताएं जो पूरी करते हैं, वह क्या आपके उससे भी अधिक उपकारी नहीं? उनके दुख-सुख का ख्याल रखना, उन्हें तनख्वाह से हटकर भी मदद देते रहने से वह आन्तरिक खुशी अनुभव करते हैं। जिनकी वजह से आप आरामदायक ज़िन्दगी जी रहे हो, वह आपके बहुत बड़े उपकारी हैं।

नये वर्ष में यदि हम और संकल्पों के भिन्न किसी और के लिए सोचने और करने का संकल्प ले सकें, तो हम अपने विकास की ओर कदम बढ़ा सकते हैं।

सुरजीत बराड़

धर्म जीवन

खण्ड 19 अंक 2
फरवरी 2007
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

पैतृक दर्द

श्रीमान डाक्टर दूनी चन्द जी निझावन, पुराने बहुत नेक दिल साथी सेवक श्रीमान अमरनाथ जी निझावन के सुपुत्र हैं। वह हिसार यूनिवर्सिटी से रिटायर हुए हैं। वह अभी बच्चे ही थे। शायद ग्यारवीं या बाहरवीं क्लास में पढ़ते थे, तो एक बार वह सोलन सत्संग में आए और वहां उन्हें बहुत लाभ हुआ। उन्होंने अपने सोलन सत्संग में आने का कारण बताया, उन्होंने बताया कि वह अपने पिता के सिर को दबा रहे थे, तो उन्होंने अपने पिता जी से पूछा कि क्या आपके सिर में बहुत दर्द हो रहा है, तो पिता जी ने बताया कि सिर से ज़्यादा मेरे दिल में दर्द हो रहा है। बेटे ने उसका कारण पूछा तो उन्होंने बताया कि बेटा तू समाज के सत्संग में नहीं जाता, जो बेहद कीमती है, इसका तुम्हें बहुत घाटा पड़ रहा है, जो तुम्हें नज़र नहीं आता। मेरे मन में बहुत दर्द हो रहा है। ऐसा सुनकर दूनी चन्द जी सोलन सत्संग के लिए तैय्यार हुए थे। फिर पिता ने सोलन के लिए पैसे दिए, लुधियाना से उनके भाई प्रकाश ने भी उन्हें पैसे दिए। सोलन पहुँचकर उन्होंने बहुत लाभ उठाया। उसके बाद उन्होंने एम. एस.सी. पास की डाकटरेट की और प्रोफैसर बने, अब रिटायर हो चुके है। इसके बाद मेरी जानकारी के अनुसार वह बहुत कम सत्संग में आए हैं।

बच्चे ज्यों ज्यों बड़े होते हैं, अच्छा कमाने खाने के योग्य होकर उच्च पदों पर सुशोभित हो जाते हैं। 99 प्रतिशत से भी अधिक अपने आपको अधिक विद्वान समझने लगते हैं। माता पिता का सन्मान करके, माता पिता के शारीरिक दुख सुख को महसूस करके भी, उनकी ज़रूरतों पर बहुत अधिक धन खर्च करके भी, माता पिता की तड़प, उनकी अपने बच्चों के सच्चे भले के फिकर और दर्द को अनुभव करने से हट जाते हैं। अपने आपको अपने भले बुरे के प्रति भी अधिक सियाना और ठीक समझने लगते हैं। माता पिता के आयु पर्यन्त अनुभव से लाभ नहीं उठाना चाहते। अपनी मनमर्जी करने लगते हैं। अपनी जवानी वा और प्राप्तियों के जोश में कुराहे पड़ जाते हैं और हानि उठाने लगते हैं। उनको अक्सर अपने सुख स्वादों की चाट में अपने माता पिता के अन्दर के दुःख दर्द का एहसास नहीं रहता। माता पिता की अच्छी

सेवा करके भी सन्तुष्ट रहते हैं। माता पिता के भीतर भी कोई दर्द है, दु:ख है, इस तरफ उनका ध्यान नहीं जाता।

संवेदनशील, उच्च दर्जे के सेवक वा कर्मचारी माता पिता अपने बच्चों की गफलत को देख कर अपने हृदय में अथाह दुख अनुभव करते हैं जबकि वह संगत से दूर रहते हैं, वहां पहुंचने में अपना कोई सौभाग्य नहीं देखते, गुरु की समाज को साधारण चीज़ समझने लगते हैं। धीरे-धीरे समाज की पाप सम्बन्धी प्रतिज्ञाओं की क़दर खोते जाते हैं, खाने पीने में समाज की या गुरू की इच्छा से अधिक अपनी मान बढ़ाई देने वाले दोस्तों, मित्रों के सर्कल में खुशी समझने लगते हैं। कई बच्चे तो इतने अभागे और गरूर हो जाते हैं कि वह देवात्मा को भी साधारण देखने लगते हैं, समाज की कोई विशेषता नहीं देखते। ऐसे बच्चों के नैतिक पतन, सांसारिक सम्बन्धों में आते हुए नर्क को देखकर संवेदनशील माता पिता का दिल जितना दु:खी होता है, उसकी सीमा को वह समझ नहीं पाते। धीरे-धीरे माता पिता घोर निराशा और घुटन के शिकार हो जाते हैं। 99 प्रतिशत बच्चों का इस ओर ध्यान नहीं जाता। कई प्रकार के दु:ख झेलकर भी उनका इस ओर ध्यान नहीं जाता। माता पिता की तड़प को वह समझ नहीं पाते और माता पिता के प्रति अपने सन्मान वा अन्य कर्त्तव्य पूरे करके अपने आपको सद् सन्तान की पदवी देकर सन्तुष्ट रहते हैं।

जैसे एक गरीब इन्सान ने बहुत खून पसीना बहाकर अच्छा धन कमाया हो और धन सम्बन्धी और मान सत्कार वा उपलब्धियां प्राप्त की हों, परन्तु उनके बच्चों को जब उस धन और उससे बहुत सी सुविधाएं प्राप्त हो जाती हैं, तो उनको उस धन की वह क़दर नहीं रहती, जो अपनी चमड़ी उधेड़ कर कमाए धन की उनके माता पिता को क़दर होती है। उनके बच्चे उस धन को बहुत बेरहमी से अपने सुख स्वादों में खर्च करते हुए देखे जाते हैं। इसी प्रकार एक एक गरीब, तुच्छ और मामूली हैसीयत रखने वाले सेवक, सौभाग्य से देवात्मा के दर को प्राप्त करके और उच्च कर्मचारियों की मेहनत से समाज की धीरे-धीरे कदर समझने लगते हैं और उन्हें समाज के बाहर अपने जीवन की रक्षा के कहीं सामान नज़र नहीं आते। परन्तु कठिनता से मिली देवात्मा द्वारा स्थापित समाज से पाई अमूल्य बरकतों को अल्प समय में हुए अमीरों के बच्चों की तरह उनके भी बच्चे उसकी कदर व गनीमत को देखने के अयोग्य हो जाते हैं और राजों महाराजाओं से भी बड़े और अमूल्य सौभाग्य की बेकदरी करके बर्बादी के मार्ग पर पड़ जाते हैं।

देव धर्म जैसी नादर समाज में भी बच्चों के भीतर माता पिता के उक्त दर्द के एहसास का अकाल ही देव धर्म या देव समाज की उन्नति न होने का बड़ा वा ठोस कारण है। यह मनुष्य प्रकृति का बहुत बड़ा शाप है।

कई बच्चे तो अपने माता पिता की इच्छा के विरुद्ध जाकर भी अपने आपको ठीक समझने लगते हैं।

यह बड़ा कारण है कि आज समाज के बड़े बड़े पुराने उच्च कर्मचारियों त्यागियों वा तपस्वियों की सन्तान में से समाज के भीतर कोई दिखाई नहीं देता। परिवारों पर की हुई मेहनतें वा संग्राम व्यर्थ

जाता है।

बहुत ही कम ऐसी सन्तानें हैं जो अपने माता पिता के उक्त दर्द को कुछ महसूस करती हैं, परन्तु उनकी सन्तानों की फिर वही दुर्दशा हो जाती है। हम उन मुबारक सन्तानों को सामने लाएंगे और उनके आगे झुकने का यत्न करेंगे कि जिन्होंने माता पिता के उक्त दर्द को अनुभव किया है और इस पक्ष में माता पिता को सुखी रखा है और घोर तड़प से बचाया है।

सबसे पहले मेरा ध्यान उच्च लोक वासी सरदार साहिब सरदार जमीयत सिंह जी की ओर जाता है। वह बहुत बड़े सौभाग्यवान थे, वह स्वयं भी गुरू मिशन के बहुत योग्य और उत्साही वर्कर थे। उनके सुपुत्र सरदार साहिब सरदार सरमुख सिंह जी एक वकील होकर भी सारी उमर गुरू महाराज के कर्मचारी बने और बहुत वर्ष देव समाज के प्रबन्ध के मैंबर रहे और आखरी सांस तक वह गुरु और उनकी समाज के अटूट अंग रहे। इसके बिना वह और कुछ सोच ही नहीं सकते थे। बड़ा अमीर खानदान रखकर, उच्च पदवियां रखकर वह समाज के बिना और कुछ लाभदायक नहीं सोचते थे। अपने श्रद्धेय पिता जी की पूर्ण पैरवी करना ही उन्हें सबसे बड़ा सौभाग्य नज़र आता था। उनकी सुपुत्री सतवंती जी ने भी कुमार व्रत धारण करके सारी उमर समाज में लगाई। उनकी दो दूसरी बहनों की शादी भी देव समाज के ही परिवार में हुई। उससे आगे उनके बड़े पुत्र देर तक समाज से सम्बन्धित रहे और स्कूल के मैनेजर भी रहे। सरदार सरमुख सिंह जी के अनुसार जीवन व्यतीत करते रहे। सरदार जमीयत सिंह जी का जो उच्च जीवन था, उनकी जो सेवा वा त्याग था, उन्होंने जो कुर्बानी वा मुरब्बे जमीनों का दान किया, वही जीवन का ढंग सुपुत्र ने भी अपनाया और खुशी-खुशी अपने पिता का साथ दिया। जैसा बाप वैसा बेटा बनकर जीए। ध न्य हैं सरदार साहिब सरदार जमीयत सिंह जी और उनका विशेष जीवन, उनका ऐसा लहू जिसके आगे सदा सिर झुकता है।

दूसरे मेरे सामने आ रहे हैं, दिल्ली के डाक्टर सिरी राम जी और उनके सुपुत्र बाबू मदन मोहन लाल जी। उन्होंने समाज में आकर सदा आज्ञाकारी बेटा होने का सबूत दिया। पिता के फरमान पर फूल चढ़ाए। पिता ने विकासालय में डेरा डालकर अपने जीवन की शाम गुजारी थी। पुत्र को उन्होंने नसीहत की थी कि "बेटा, सारी उमर नौकरी ही न करते रहना, कुछ समय पहले रिटायर होकर गुरु की पैदा की हुई संगत में अवश्य रहना।" बेटे ने उनके इस फरमान को पूरा किया। कई वर्ष पहले नौकरी छोड़कर विकासालय में डेरा लगा लिया। वही सीट जो पिता ने आकर सम्भाली थी, वह उन्होंने सम्भाल ली। समाज के कर्मचारी बनकर सेवाकारी होते हुए इस संसार को छोड़कर गए। जैसे सरदार सरमुख सिंह जी ने दो मुरब्बे जमीन समाज को पिता द्वारा दिए जाने पर खुशी प्रगट की थी, उसी प्रकार डाक्टर सिरी राम जी ने देहली में अपने दो मकान आदि बेचकर उस समय (60-70 वर्ष पहले) 22 हजार रू० (जो आज 50 लाख रूपये के होंगे) समाज को दान करते हुए कोई दुख प्रगट नहीं किया, बल्कि पूरी खुशी मनाई।

तीसरे मेरे सामने श्री काका जी, विशेष

सन्मान के योग्य श्रीमान सत्यावान जी कनल आ रहे हैं, उन्होंने भी अपने श्रद्धेय पिता जी श्री कनल जी के पद चिन्हों पर चलकर पिता जी की पाक खुशियों को बढ़ाया। वह अपने श्रद्धेय माता पिताजी की खुशी के लिए सब कुछ करने वाले सुपुत्र थे। वह अपने माता पिता के विशेष भगत पुत्र थे। उन्होंने ऊंची शिक्षा ग्रहण करके, लैक्चर देकर साहित्य रचकर, कनल जी के विशेष योग्य पुत्र होने का परिचय दिया। उनकी बहुत प्रसिद्धि थी, परन्तु वह अपने पिता का अपने आपको नाचीज़ पुत्र समझते थे और पिता को बहुत महान जीवन धारी के रूप में देखते थे। धन्य थे कनल जी और धन्य थे श्री काका जी, दोनों को लाखों प्रणाम।

इससे आगे मुझे श्री अमरनाथ जी ऐडवोकेट का पितृ-भक्ति का रूप सामने आकर झुकाता रहा। वह बहुत बड़े वकील थे। उन्होंने क्लबों में जाना-अफ्सरों और जजों के साथ ताश खेलना शुरू कर दिया। पिता को अपने बेटे का अफसरों के साथ ताश के नाम पर जुआ खेलना और क्लबों में जाना बहुत बुरा लगा। वह एक शाम को अपना कमण्डल और कुछ वस्त्र लेकर अपने मकान के बाहर दरवाजे पर बैठ गए। जब बाबू अमरनाथ जी क्लब से वापिस आए, तो बेटे को सम्बोधन करके कहा कि बेटा यह ले तू अपना घर सम्भाल, मैं इस घर में नहीं बैठ सकता। पुत्र ने कारण पूछा तो पिता ने कहा कि जुआ खेलने वाले के घर में मैं नहीं रह सकता। पुत्र हैरान होकर पूछने लगा कि पिता जी मैं कौन सा जुआ खेलता हूँ। पिता ने बताया कि क्लब में पैसे लगाकर ताश खेलना जुआ नहीं तो और क्या है? बेटे ने उसी समय कहा कि मैं आगे से क्लब में ताश नहीं खेलूंगा। पिता ने वकील पुत्र को कहा कि कान पकड़कर नाक से इस ज़मीन पर सात लकीरें निकाल, पितृ भक्त पुत्र ने कान पकड़कर नाक से लकीरें निकाली और कहा कि "मैं जुआ नहीं खेलूंगा।" वाह! कमाल कर दिया। पिता की पाक खुशी हासिल कर ली। पिता की इच्छा अनुसार जिन्दगी की शाम अपनी बहुत अच्छी वकालत छोड़ कर संगत में डेरा लगा कर गुज़ारी और कई पक्षों में समाज की बहुत अच्छी सेवा करके कई वर्षों तक अपना भला किया। सारी उमर इस नादर समाज से जुड़े रहे।

शत-शत प्रणाम है ऐसे पिताओं को और उनकी सन्तान को।

(बलदेव सिंह)

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229, 2716914

माता के लिए श्रद्धांजलि

परमहित कर्त्ता सत्गुरु परम पूजनीय भगवान देवात्मा की अपार कृपा है कि उन्होंने मुझ जैसे तुच्छ को मां का थोड़ा सा रूप देखने की आंख दे दी जो मां का असल रूप होता है। और जितना महाराज दिखाना चाहते हैं उस रूप को देखने के लिए जिन भावों की जरूरत है वह भाव मुझ में नहीं हैं, अगर हैं तो उनकी मात्रा बहुत कम है।

मेरी मां एक गरीब परिवार से आई थीं। उस समय लड़कियों को पढ़ने के लिए स्कूल नहीं भेजा जाता था। और न ही उनके गांव में स्कूल था। जिस कारण से वह पढ़ नहीं सकीं, मगर फिर भी वह एक रोशन दिमाग की मालिक थीं। जब उनकी शादी हुई उनकी उम्र मात्र 11 - 12 साल थी। जैसा कि वह बताया करती थीं कि पिता जी का स्वभाव बहुत गर्म था, वह Custom में डी.एस.पी. लगे हुए थे। मगर फिर भी माता जी ने हमारे घर में आते ही अपनी सूझ बूझ से घर को सम्बन्धों में जोड़े रखा। पूरी जिन्दगी पहले अपने पति के लिए फिर अपने चार बच्चों के लिए कठोर परिश्रम करती रहीं। जब से मैंने होश संभाला है मैंने देखा कि इतना बड़ा घर, उसके साथ दो भैंसें, एक गाय और हम चार भाई, सुबह 4 बजे से रात के 10 बजे तक वह लगातार घर का काम करती थीं। घर के काम में उनको साथ देने वाला, उनकी मदद करने वाला कोई नहीं होता था। मेरी कोई बहन नहीं है, इसलिए सारा घर का काम वह अकेली ही करती थीं।

उन्हें सफाई का इतना बोध था कि वह सारे घर की सफाई सिर्फ अपने आप ही करना पसंद करती थीं। हर सामान को बड़े तरतीब से रखती थीं। गाय भैंसों की भी पूरी सेवा करती थीं। उनको नहलाना, चारा डालना, उनके लिए दवा दारू का इन्तजाम करना, उनका दूध निकालना आदि उनकी दिनचर्या थी। घर की सफाई के साथ वह हम सब के कपड़े शहर में चलती नहर पर लेकर जाती थीं, क्योंकि काफी समय तक शहर में पानी का इन्तजाम नहीं था। घर में पानी का Connection बहुत Late आया था, इसलिए वह नहर पर कपड़े धोने जाती थीं। और यह दिनचर्या उनकी सालों साल चलती रही।

पिता जी को गाय भैंसों का बहुत शौक था, अगर एक गाय या भैंस बेचनी पड़ती थी, तो उसी दिन दूसरी आ जाती थी। घर में दूध भरपूर होता था, अपने प्रयोग के बाद भी, काफी दूध बच जाता था, उसे बेचने के लिए उन्होंने कभी उसमें पानी नहीं मिलाया। उन्होंने जो भी काम किया बड़ी ही ईमानदारी से किया। सारी जिन्दगी में एक पैसे की कर्ज़दार नहीं थीं।

माता जी बहुत ही सादगी पसंद थीं। सारी ज़िंदगी उन्होंने कपड़ों या जेवरों का कोई लालच नहीं किया। गरीब घर से सम्बन्ध होने के कारण उनके साथ कुछ ज्यादा सामान नहीं आया था, परन्तु शादी के बाद उन्हें सब कुछ मिला परन्तु उन्होंने उससे कभी लगाव नहीं किया।

माता जी बहुत ही किफायती थीं। घर में पैसे की कमी नहीं थी पर फिर भी वह बिल्कुल फजूलखर्ची नहीं करती थीं। दान दक्षिणा देने में कभी कोई कमी नहीं रखती थीं। यहां तक कि मौत के बाद उन्होंने अपनी दोनों आंखें दान कर दीं और खुशी की बात तो यह है कि दो मरीजों को आंखें मिल गईं और वे देखने लगे। इसलिए आज भी उनकी आंखें इस संसार को देख रही हैं।

माता जी में दया भाव भी था। किसी दुखिया या मजबूर की मदद करने को हमेशा तैयार रहती थीं।

हमारे गंगानगर वाले मकान में काफी किराएदार रहते थे, उनके परिवारों में किसी को कोई भी तकलीफ होती, तो उनके लिए सेवा वा दवाई आदि के लिए हमेशा तत्पर रहती थीं। यही व्यवहार उनका पारिवारिक सदस्यों के लिए भी होता था।

इन सब से ऊपर माता जी ने अनपढ़ व गाँव की औरत होकर गुरु महाराज जी को पहचाना। मिथ्या विश्वास छोड़े और 1956 में सत्गुरु जी की सेवका बनीं। सारी जिन्दगी उन्होंने गुरु के प्रति अपने प्रेम व श्रद्धा को बनाए रखा और अन्तिम समय में अपने सिर पर गुरु का दिया ताज पीला दुपट्टा सजाए रखा। वह पढ़ना नहीं जानती थीं पर पिता जी से देवशास्त्र सुनती थीं। भजन गुनगुनाती थीं व यथासाध्य साधन भी करती थीं। और हम सब बच्चों को गुरु से जोड़ने के लिए तड़प रखती थीं।

वह खुद चाहे अनपढ़ थीं, परन्तु पढ़ाई की कीमत को समझती थीं। उन्होंने हम चारों भाईयों को खूब पढ़ने को प्रेरित किया परन्तु हम सब अपनी अपनी योग्यता के अनुसार ही पढ़ पाए। पढ़ाई की कीमत को जानती थीं, इसलिए मरने के बाद भी दो बच्चों की पढ़ाई का इन्तजाम करके गई हैं, क्योंकि उनको मरने से कुछ दिन पहले पैसा मिला उसे Post Office में रख कर उसके interest से पढ़ाई का इन्तजाम करवाया।

इसके अलावा अपने आप को गुरु का कर्ज़ाई मानती थीं। उनके उपकार अपने सामने रखती थीं। उनके निधन से पहले पिता जी की पेंशन के उन्हें कुछ पैसे मिले। उसमें से 35,000 रू० समाज में दान देने को कह गई हैं।

हमारे परिवार पर मां के अनगिनत उपकार हैं, खास कर मैं अब बहुत महसूस कहता हूं। सबसे पहले उन्होंने मुझे एक स्वस्थ शरीर दिया है, अच्छा दिल व दिमाग दिया। अपना सब सुख भुलाकर मेरे बीमार होने पर रात रात को जागीं। मेरी हर छोटी बड़ी तकलीफ में अपने आप को न्योछावर किया। मुझे पढ़ाया, लिखाया, वकील बनाया परन्तु मैंने उनको कभी अपना उपकारी नहीं माना। बल्कि इसके विपरीत उन्हें दुःख दिया।

माता जी गुरु के चरणों में थीं, और हमें उनसे जोड़ने को व्याकुल थीं, मगर हम में से कोई ऐसी हालत में नहीं था। मैंने दसवीं तक आते आते शराब, मांस, सिगरेट, चोरी आदि सब गलत काम शुरू कर दिए थे। इन सब बातों से उन्हें बहुत तकलीफ होती थी, परन्तु मैंने कभी महसूस नहीं की। और यह सब 13 वर्षों तक चलता रहा और मैं उन्हें कितनी तकलीफ पहुँचाता रहा, इसे अब महसूस करता हूँ। 13 वर्षों में जो तकलीफ उन्हें दी, उसे महसूस करके बहुत बार माफी मांगी।

उनका मेरे ऊपर सबसे बड़ी उपकार था, कि मुझे गुरु महाराज जी से जोड़ दिया। अगर ये नहीं होता तो उस वातावरण में व अपनी आदतों की वजह से मैं खत्म हो गया होता।

आज जब मैं अपने आप को या अपने बच्चों को देखता हूँ, गुरु महाराज जी के अतिरिक्त अपनी मां को भी धन्यवाद देता हूँ, क्योंकि अगर वह मुझे चण्डीगढ़ न लातीं तो कुछ भी संभव नहीं था। मेरा और मेरे बच्चों का उस वातावरण में बचना बहुत मुश्किल था। अब आगे मेरे बच्चों की सामर्थ्य है कि वे इस वातावरण से जुड़ कर लाभ उठा सकते हैं। ये तो सच है कि इस पवित्र दरबार से परे जाकर मौत ही मौत है। अगर जीवन है तो यहीं है।

आखिर में, मैं यही प्रार्थना करता हूँ कि माता जी को परलोक में अच्छे से अच्छे हालात मिलें। उच्च कर्मचारी सम्बन्धी बुआ जी, श्रीमान नोध सिंह जी, श्रीमान गुरवन्त सिंह जी और मेरे उपकारी पिता जी का

साथ मिले, वे उन्हें संभालें। सभी परलोकवासियों से मेरी व मेरे परिवार वालों की बहुत रक्षा होती है, सहायता मिलती है। मैं कामना करता हूँ कि उनकी दया का हाथ हमेशा मेरे व मेरे पारिवारिक जनों पर रहे। मैं ज्यादा से ज्यादा उनके सद्‌गुणों को सामने ला सकूं। उनके उपकारों को महसूस कर संकू, और उनके लिए की गई अवज्ञाओं के लिए माफी मांगता रहूँ।

आपका उपकृत बेटा

जगदीश

वे ही मुखिया हैं...

घर के बुज़ुर्ग सबकी खैर-खबर रखकर संतुष्ट रहते हैं। अगर वे अस्वस्थ हैं, उम्र के कारण शरीर से अक्षम हो चले हैं, तो उन्हें उनकी मुखिया की पदवी से बेदखल कैसे किया जा सकता है? सुपर सितारे अमिताभ बच्चन के अनुभव से जानिए कि वे अपनी जन्मदात्री के लिए कैसा सम्मान-भाव रखते हैं -

'मैं कितना भी व्यस्त क्यों न रहूं, मां के लिए वक्त निकाल ही लेता हूं। मैं दिन में दो बार, सुबह और शाम उनके कमरे में ज़रूर जाता हूं। कई बार वे मुझे कुछ देर रुकने को कहती हैं, जिसे में कभी टाल नहीं सकता।

जब मैं शहर से बाहर रहता हूं, जो रोज मां को चिट्‌ठी फैक्स करता हूं, फोन या ई-मेल की तुलना में मुझे खुद लिखे शब्द ज्यादा आत्मीय लगते हैं। फैक्स मिलते ही मां तुरंत जवाब भेजती हैं, चाहे पांच लाइन का ही क्यों न हो। नीचे हस्ताक्षर कर और तारीख लिखकर।

वे 88 वर्ष की हैं और मैं उनकी लिखावट भी ठीक से समझ नहीं पाता हूं। लेकिन उनका प्यार से लिखना ही मेरे लिए बहुत अहम् है। उनके खत मेरे लिए सबसे अमूल्य निधि हैं, जिन्हें मैं हमेशा सहेजकर रखता हूं।

मां की परवाह का उम्र से भला क्या ताल्लुक? रात को मिलने जाऊं, तो वे कभी पूछना नहीं भूलतीं कि मैंने खाना खाया या नहीं। शाम को घर से निकलूं, तो रात जल्दी घर वापस आने को कहेंगी। मैं पूरे आदर के साथ उनकी बात सुनता हूं, इससे मां को जो खुशी मिलती है, वह ब्यान करना मुश्किल है। सिर्फ इसलिए कि वे बीमार हैं और पहले की तरह परिवार की कमान नहीं संभाल सकतीं, उनकी उपेक्षा कैसे की जा सकती है। इन छोटी-छोटी बातों से उन्हें यह अहसास होता है कि वे परिवार की महत्त्वपूर्ण सदस्य हैं और उनकी हमें ज़रूरत है। यही भाव बुजुर्गों में ऊर्जा और उम्मीद बनाए रखता है।

मेरे ख्याल में वरिष्ठजन बोझ नहीं बल्कि हमारे लिए अनुभवों का खज़ाना हैं। सिर्फ कमज़ोर होते शरीर के चलते उन्हें कैसे नकारा जा सकता है।

हम जीवन में कितने ही सफल हो जाएं, माता-पिता का कर्ज़ नहीं चुका सकते। इसमें शायद माता-पिता का बच्चों के साथ रिश्ता भी मायने रखता है। मैं खुशकिस्मत हूं कि मां और मैं बिना ज्यादा कुछ कहे एक दूसरे को इतनी गहराई से समझते हैं। मैंने ऐसा ही रिशता अपने बच्चों के साथ कायम करने की कोशिश की है। बदलती दुनियां के साथ खुद को अपडेट किया। ये मुश्किल भले ही लगे, पर असंभव नहीं है। बदलाव जरूरी है लेकिन सम्मान के साथ जीना सभी का हक है, हर उम्र में, हमेशा।'

सौजन्य - हार्मनी

बच्चों का फर्ज़

(डाक्टर देव अनुरूप बरार जो विदेश में रहते हैं, वहां पर अपने और कामों के भिन्न एक सेहत पर मैगज़ीन निकालते हैं, जिसमें अमरीका के प्रसिद्ध डाक्टरों के द्वारा भिन्न-भिन्न स्वथ्य सम्बन्धी विषयों पर लेख होते हैं। पब्लिशर के नाते वह एक छोटा सा आर्टीकल अपनी ओर से से लिखते हैं, जो गुरु महाराज की शिक्षा से ही प्रेरित होता है। उसका हिन्दी में अनुवाद नीचे दे रहे हैं।

एक बहुत खुशनुमा सुबह का समय है और आपने अपने बच्चों के साथ बाहर जाने और उनके स्कूल के प्रोजैक्ट के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के पत्ते इकट्ठे करने का कार्यक्रम बनाया है। जैसे ही आप घर से बाहर निकलने लगते हैं, फोन की घंटी बजती है। यह आपकी माता जी का फोन है, जो नज़दीक के हस्पताल से बोल रही हैं। उन्होंने फोन पर बताया कि तुम्हारे पापा को मैं रात हस्पताल में लेकर आई हूँ क्योंकि उनकी छाती में दर्द था। माता बताती हैं कि बेशक अब तुम्हारे पापा की हालत ठीक है, एक आध दिन में उन्हें घर जाने की छुट्टी मिल जाएगी।

पहला रिस्पौंस :- तुम फोन रख देते हो और अपने बच्चों को बताते हो कि पारिवारिक प्रोग्राम बदल गया है। आप बताते हो कि आपके दादा जी हस्पताल में हैं। बेशक उनकी हालत ठीक है, परन्तु हमने अवश्य उन्हें देखने जाना है। तुम्हें इस बात का दुख होता है कि तुम्हारी माता जी ने तुम्हें रात को ही क्यों नहीं बताया। बच्चे ज़िद्द करते हैं क्योंकि उन्हें स्कूल के प्रौजेक्ट की फ़िकर है। तुम प्यार से उन्हें समझाते हो कि दादा जी हमारे लिए ज्यादा महत्त्व रखते हैं और तुम उन्हें यह भी बताते हो कि जब तुम्हें या मुझे चोट भी लगती है, तो वह हमारा ध्यान रखने के लिए कैसे अपने सारे प्रोग्राम बदल देते हैं। तुम उन्हें बताते हो कि बेटे या बेटी का फर्ज़ है, एहसान नहीं, कि वह अपने माता पिता का दुःख में साथ दें। तुम उन्हें इससे भी आगे यह समझाते हो कि माता पिता का दर्जा सबसे पहले आता है। क्योंकि वह पहले दर्जे पर ही हैं और सदा रहेंगे। बच्चे तुम्हें लिपट जाते हैं और दादा जी को देखने सारा परिवार तुम्हारे साथ चल पड़ता है।

दूसरा रिस्पौंस :- आप फोन रख देते हैं और बच्चों को बता देते हैं कि दादा जी हस्पताल में हैं। बच्चे अपने पहले प्रोग्राम के अनुसार जाने की ज़िद्द करते हैं और आप सोचने लगते हैं कि किस प्रकार बच्चों को निराश न किया जाए और आप उनके विचारों से इस प्रकार सहमत हो जाते हैं कि आप अच्छे माता पिता बनना चाहते हैं। आप बच्चों को कहते हैं कि अपने दादा जी को फोन करके बता दो कि हमारे प्रोग्राम पूरा होने के बाद हम आपको मिलने आएंगे। आप माता को फोन लगाते हैं तो वह कहती हैं "फ़िकर न करो, जब समय लगे, तुम आ जाना।" अब तुम खुश हो कि तुमने बच्चों को खुश कर दिया।

ऐसी घटना पर आपके व्यवहार से कौन सा रिस्पौंस मिलता है?

सोचो कि क्या होता यदि तुम्हारे माता

पिता भी यही व्यवहार रखते कि "हम आ जाएंगे, जब समय मिलेगा?"

बुढ़ापा बचपन का दूसरा जन्म है। जो कुछ हम माता पिता के लिए करते हैं, वह बहुत ही कृतज्ञता के साथ उसे स्वीकार करते हैं।

मैं आपको इस Challenge के साथ छोड़ता हूँ। क्या हमारे बच्चे उसके लिए कृतज्ञ हैं, जो हम उनके लिए करते हैं? सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि क्या हम अपने माता पिता के लिए कृतज्ञ हैं? अधिकतर हम जो कुछ भी हैं, अपने माता पिता की मेहरबानी से हैं। अच्छे माता पिता होने का फर्ज़ निभाने के लिए हमें उनके सामने अपना अच्छा उदाहरण रखना होगा। यह फैसला करने से पहले कि हमने अच्छे माता पिता बनना है, यह फैसला करना है, कि हमने अच्छी सन्तान बनना है।

सिर्फ माँ

सिर्फ मां होती है
प्रारम्भ से अंत तक
मां की भूख, भूख कहां होती है?
दो निवाले तोड़ने होते हैं बस
शरीर को चलाने के लिए
हमें अच्छा खिलाने के लिए
दिनभर खटती है मां रसोई में।
मसालों की गंध, जायकेदार तड़के
हमारी भूख बढ़ा देते हैं
नर्म-नर्म फुलके थाली में आते ही
गायब हो जाते हैं।
हमें राजकुमार/राजकुमारी बना देख
अपनी दिन भर की थकान पल में भुला देती है मां
मां एक जादुई-मुस्कान में समा जाती है।
मां की नींद, नींद कहां होती है
हमारी अलार्म घड़ी है मां
घड़ी के कांटों से मुकाबला करती।
मानो दिन को परास्त करती है।
हमारे लिए कभी-कभी तो उम्रभर भी जाग जाती है मां।
हमें सोया जान माथ पर डरते-डरते
फिराती है अपने खुरदरे हाथ और
वारी-वारी जाती है हमारी नींदों पे।
हमारे अव्वल आने पर बार-बार
मार्कशीट को लगाती है छाती से।
अविरल बहती रहती है अश्रुधार
मानो खुद के अल्प-शिक्षित रह जाने का
अफ़सोस गला रही हो आंसुओं में
हमारे ऊंचे मुकाम तक पहुंचने में
मां चुक चुकी होती है पूरी तरह
पर अब एक लौ दिपदिपाती उसकी आंखों में
हमारी ऊंची उड़ानें उसे आत्म-गौरव से पूर देती हैं
उसकी आश्वस्ति अब विस्तार पाती है।
पानी के पंखों पे सवार हो
लहरों से जीतना चाहती है वह, पर।
कितनी भोली है मां
हमारी उड़ानें हमें उससे दूर ले जाती हैं अनवरत
उसकी प्रतीक्षा और हमारी प्रगति
एक-दूसरे से होड़ करते हैं और
इस होड़ में हम जीत जाते हैं।
मां दूसरे छोर पर उदास बैठी रह जाती है।
ठगी सी।

अध्यात्मिक उन्नति की कामना का पत्र

नीचे एक ऐसी माता जी की एक चिठ्ी नकल की जाती है जो भगवान् देवात्मा के देव प्रभावों को आप पाने और अपने लड़कों तक पहुँचाने की तीव्र आकांक्षा को प्रकट करती है।

मेरा बहुत ही अजीज़ कई बार याद आने वाला प्यारा काका,

मैं आपको बहुत ही बहुत प्यार देती हूँ और सब प्रकार के हित की कामना करती हूँ।

काका जी, यूं तो जिस दिन से मात-पिता सन्तान के सम्बन्ध में साधन शुरू हुए हैं तुम सब भाईयों को याद करके तुम्हारे और तुम्हारे परिवारों के लिये प्रति दिन प्रात: कामना करती हूँ कि नेचर में तुम सबका जितना हित होना मुमकिन है उतने हित के लिये मार्ग साफ हो, अनुकूल सामान पैदा हों। सब प्रकार के विध्न बाधाएं और दुर्घटनाएं दूर हों और मैं अपनी तुच्छ योग्यता के अनुसार पूजनीय भगवान का बल पाकर केवल यही नहीं कि मां के भाव को लेकर तुम सब के साथ जुडूं और सब को मुहब्बत करूं बल्कि तुम सब के आत्मिक हित के लिये भी जो सबसे जरूरी काम है, कुछ न कुछ मददगार बन सकूं। किसी न किसी अंश में तुम लोगों के हित में काम आ सकूं मगर कल अजीज ..... ने तुम्हारे अच्छे भावों से लिखा हुआ पत्र पढ़ कर सुनाया कि जिस को सुन कर मैं कई बार दिल में यह विचार करती थी कि क्या यह मुमकिन भी था कि जो कुछ तुमने मेरे भावों के लिये लिखा है, वह लिखते। (वह भाव मेरे अन्दर हैं या नहीं, यह अलग बात है) और तुम लोग इस तरह मेरा उपकार स्मरण और गुण चिन्तन करते बल्कि होना तो यह था कि मैं कहती कि मेरे लिये यह नहीं करते, वह नहीं करते। तुम लोगों ने भी यही प्रकाश करना था कि हर वक्त तंग ही करती रहती है और तुम्हारी स्त्रियों ने भी यही शिकायत करनी थी कि मां हमको चैन से नहीं रहने देती। यह सारी की सारी पूजनीय भगवान देवात्मा की कृपा का फल है और एक करामात है कि ऐसे स्वार्थी खानदान में पैदा होकर कि जहाँ अपनत्व के घेरे से बाहर कोई नज़र नहीं आता चाहे मां हो या बाप, बहनें हो या भाई, तुम ऐसा करते हो। यह उसी महाबलि हस्ती की कृपा है कि जिन की सहायता से मैं भी तुम सब के लिए दिली भावों से हित की कामना करती हूँ। मगर नसलों से आए हुए कई नीच भाव या अपनी कोई गर्ज किसी वक्त पूरी होती न देख कर या खुदगर्जी के भाव पर चोट लगने से उल्ट पुलट हो भी जाती हूं तो उसी समय भगवान् की ज्योति यह दिखलाती है कि मेरा यह कर्त्तव्य नहीं कि मैं अपने किसी बच्चे या उसके परिवार की त्रुटि को देख कर उससे फट कर दूर हो जाऊं। बल्कि मेरा यह कर्त्तव्य है कि मैं मातृ रूप रख कर तुम लोगों के हित की ही आकांक्षी रहूँ। अपने इस नीच भाव को देख कर जो तुम लोगों से कई बार दूर कर देता है और निराशा से भर देता है, मैं कई बार पछताती हूँ और रोती हूँ कि जिन के हित का ज्यादातर मुझ पर ही भार है और मैंने ही जिनको अच्छी या बुरी शिक्षा दे कर पाला और पोसा है, उन की किसी त्रुटि को देख कर घृणा करूं तो मेरे लिये कितना दुख का समय

है। मैंने जिनके लिये अपना सब कुछ कुर्बान किया है, कई प्रकार की उलझनों में से गुजरना पड़ा है और कई प्रकार की दिक्कतों का मुंह देखना पड़ा है, उनके ही सच्चे हित के लिये कुछ नहीं करती या अपनी किसी गर्ज़ को न रख कर दिली भावों से प्यार नहीं करती तो किसी और के लिये क्या खाक कर सकती हूँ?

काका जी, जो कुछ तुमने मेरे उपकारों को चिन्तन किया है वह कोई निराले उपकार नहीं। शरीर की पालना के लिये माता के ऊपर भार रहता है, सिर्फ इस फर्ज को पूरा किया है।

कई बार यह भी विचार करके देखती हूँ कि तुम लोग जो मेरी सन्तान हो, मेरे लिये कई प्रकार से मददगार हो। यह तो सच्च है कि नेक बेटे अपने मां बाप की कई प्रकार की उचित प्रसन्नता में खुशी लाभ करते हैं मगर पूजनीय भगवान का धर्म राज्य का रास्ता बहुत कठिन है। इसमें कई प्रकार की दिक्कतें आती हैं। मैं दिली भावों से कहती हूं कि तुम लोगों ने मेरे इतने कठिन रास्ते में कोई रोक पैदा नहीं कि बल्कि जहां तक हो सका है तुम सबने ही मेरी इस निराले मार्ग में सहायता की है। यह तुम सब की बहुत बड़ी विशेषता है। नेक सन्तान का यही फर्ज है।

मैं कई बार पूजनीय भगवान की ही कृपा से बड़ा अभिमान करती हूँ कि मुझे गृहस्थ में रह कर जो किसी दिक्कत या तकलीफ का सामना करता पड़ा है - वह सफल हुआ है। मगर सच्च यह है कि तुम लोगों का जितना भगवान् की तरफ मुंह होगा और उनकी तरफ कदम उठेगा उतनी ही मेरी यह कामना सफल होगी और मुझे सच्ची खुशी होगी। यह सच है कि तुम लोग कुछ धन से मेरी सहायता करते हो जैसा कि नेक बच्चों का फर्ज है। इससे मुझे खुशी मिलती है और कुछ बोझ भी मालूम करती हूँ। मगर जब तुम लोगों में से किसी का किसी अंश में भगवान की तरफ कोई कदम उठता हैं या उधर कोई ध्यान होता है तो मेरी खुशी की कोई हद नहीं रहती क्योंकि इस तरफ चलने से और भगवान् की तरफ मुंह रखने से तुम लोगों का सब तरह का हित है। उन से मुंह मोड़ कर या किसी लालच में या किसी भुलावे में आकर इनसे अपने आपको दूर अनुभव करोगे तो याद रखना, कि धर्म कर्म तो कहीं रहा, संसार का सच्चा सुख भी प्राप्त न होगा। सम्बन्धों में जो सच्चा मेल है, वह मेल न होगा। पूजनीय भगवान की शिक्षा के अनुसार अपने भाईयों का जो नज़दीकी सम्बन्ध है, वह नज़दीक का न रहेगा। उन्हीं की कृपा से और उन्हीं के देव प्रभावों को लाभ करके सच्चे सुखी और भले इन्सान बन सकते हो। मेरी तुम सब के लिये यही दिली कामना है कि मैं जहां तक हो सके, अपनी किसी गर्ज को सामने न रख कर जैसे तुम लोगों के शारीरिक पालन पोषण में और कई प्रकार की दूसरी जरूरतों में मददगार होने के लिये मजबूर हूँ वैसे ही तुम लोगों का आत्मिक हित करने के लिये भी मजबूर हो सकूं। मेरी जो खुदी तुम लोगों के हित से कुछ बेमुख करती हो, वह दूर हो। मैं तुम लोगों की शारीरिक माता ही न रहूं बल्कि आत्मिक माता बन सकूं। मेरी यह कामना दिनों दिन पूरी हो। और तुम लोग अपने - अपने हितों के अभिलाषी बनो।

तुम सबका सब प्रकार से हित चाहने वाली,

तुम्हारी माता श्रद्धी।

देव समाज धर्म विकासालय मोगा

11 दिसम्बर 1944

(प्रेरक प्रसंग)

भारत के प्रसिद्ध देश भक्त कांग्रेसी नेता पंडित गोपाल कृष्ण गोखले का जब 19 फरवरी 1915 ई० को पूना में देहांत हुआ तो लाहौर देव धर्म मिशन के सेकेट्री के द्वारा शोक संवेदना का तार भेजा गया था, जिसमें लिखा था कि "देव समाज के संस्थापक एवं उनके बहुत से सेवकों को माननीय गोखले के असामयिरू निधन से बहुत दु:ख हुआ है। भारत ने एक सच्चे देश भक्त राजनेता को खो दिया है।"

भाई हो तो ऐसा।

पं० गोपाल कृष्ण गोखले का बचपन गरीबी में गुज़रा। प्रारंभिक शिक्षा जैसे-तैसे हुई। कॉलेज की पढ़ाई का खर्च सामर्थ्य की सीमा में नहीं था। वह चिन्ताग्रस्त हो गए।

बड़े भाई गोविन्द राव ने मनोबल दिया। उनकी भाभी (गोविन्द की पत्नी) ने हिम्मत दुगनी कर दी। उन्होंने अपने कुछ आभूषण बेच दिये और कालेज की प्रारंभिक फीस जमा कर दी।

गोविन्द राव का वेतन कुल पन्द्रह रूपये मासिक था। लेकिन वह अपने पास आठ रूपये रखते थे और सात रूपये गोखले को कालेज-खर्च के लिए भेज देते थे।

कॉलेज की शिक्षा दीक्षा पूरी हुई। और उन्हें पैंतीस रूपये मासिक की नौकरी मिली। बड़े भाई का किया गोखले कैसे भूल सकते थे। उनका रोम-रोम कृतज्ञता महसूस कर रहा था। सो, वह मात्र दस रूपये अपने खर्च के लिए रखकर शेष पच्चीस रूपये बड़े भाई को भेज देते थे। बड़े भाई ने रूपये न भेजकर उन्हें अपनी सुविधा और जरूरत के लिए खर्च करने को कहा लेकिन गोखले की अन्तरात्मा मान नहीं रही थी। बड़े भाई की गृहस्थी का भार कम करने तथा उनके सुख के लिए वह क्या कर सकते हैं, गोखले दिन रात यही सोचते रहते थे। निस्वार्थ ममता का मूल्य चुकाया नहीं जा सकता। गोखले अपनी तरफ से केवल निर्मल श्रद्धा व्यक्त कर रहे थे।

जीत गया बेटा

भगवान देवात्मा 19वी सदी के अन्त में जब कांग्रेस के अधिवेशनों में सम्मलित होते थे तो उनका सम्बन्ध एक समाज सेवी कांग्रेसी नेता दादा भाई नौरोजी के साथ था।

दादा भाई नौरोजी का विवाह कुल परिवार की परम्परा के अनुसार दस-ग्यारह वर्ष में ही कर दिया गया। उस वक्त वधू मात्र सात वर्ष की थी। माँ ने लड़की पसन्द की थी। कुछ दिनों बाद माँ ने महसूस किया कि लड़की वांछनीय गुणवाली नहीं है, अत: कोई दूसरी लड़की चुनकर पुत्र का विवाह कर दिया जाए।

तब तक पुत्र भी सोच समझवाला हो गया था। माता ने अपना विचार पुत्र को सुनाया। पुत्र ने कहा- "यह स्वीकार योग्य नहीं है, माँ!" माँ नाराज़ हुई। कहने लगी "मैंने कन्या के पिता को वचन दिया है, मान अपमान का सवाल है, तुम्हारे कारण मुझे अपमानित होना पड़ेगा।"

पुत्र ने कहा- "माँ, तुम्हारी प्रतिष्ठा मुझे तुम्हारी तरह ही प्यारी है। लेकिन एक ओर प्रतिष्ठा है और दूसरी ओर एक लड़की का जीवन। दूसरा विवाह करने से पहली पत्नी का जीवन विनष्ट हो जायेगा।"

माँ पुत्र के तर्क से विचलित नहीं हुई। अपने निर्णय पर अडिग दिखी।

पुत्र ने कहा- "एक बात बताओगी, माँ? यदि मैं ही अयोग्य होता, तो आप उस कन्या को दूसरा विवाह करने की अनुमति देतीं?"

यह सुनकर माँ हक्का बक्का हो गयी। उन्होंने अपना प्रस्ताव वापस ले लिया।

बच्चों के साथ रहने के इफ्स एंड बट्स

'हर घर में कोई न कोई वृद्ध जरूर होता है। कई बार उन्हें अपने ही घर में बेगाना-सा होकर जीना पड़ता है, जो कि उनके लिए बड़ी पीड़ाजनक बात है। उन्हें देखकर ऐसा लगता है जैसे कि वे बिस्तर पर पड़े-पड़े केवल मौत का इंतजार कर रहे हों...

सभी बुजुर्गों और उनके परिवारों की परिस्थितियां एक समान नहीं होतीं। ज्यादातर बुजुर्ग अपनी युवा पीढ़ी से उपेक्षा के शिकार बने हुए हैं। क्योंकि या तो बच्चे उनके पास नहीं रहते और या वे अपनी पारिवारिक समस्याओं में इतने उलझे हुए हैं कि उनके पास बुजुर्गों के लिए समय ही नहीं है। ज़िन्दगी के आखिरी पड़ाव में वैसे भी शारीरिक शक्ति कम होती जाती है जिस कारण वे रोगग्रस्त हो जाते हैं। इतना ही नहीं कई बच्चे मां-बाप को बोझ मानते हैं जिस कारण बुजुर्गों को दुख होता है क्योंकि पहले समय में बुजुर्गों को बहुत आदर सम्मान दिया जाता था जो उन्हें अब नहीं मिल रहा। इस विषय पर हमने चंद सीनियर सिटीजंस से बात की :

'ये सब ग्लोबलाईजेशन की वजह से है। आज हालात बहुत बदल गए हैं। आज बच्चों के पास या तो समय नहीं है या उनकी सोच बदल गई है। कई बार ऐसा भी होता है कि बच्चों की फाईनेंशियल पोज़ीशन ऐसी नहीं होती जिस वजह से वे चाहकर भी अपने मां-बाप को साथ में नहीं रख पाते। लेकिन ऐसा भी देखा गया है कि बच्चे अपनी ज़रूरतें बहुत बढ़ा लेते हैं और अपनी लाइफ में इंटरफियरेंस कतई नहीं चाहते।' ऐसा कहना है संयोक्ता वर्मा का।

जबकि 76 वर्षीय के.एन.शर्मा कहते हैं 'कई बच्चे ऐसे भी हैं कि जब तक उनके बुजुर्गों के पास संपत्ति है तब तक उनके आगे पीछे घूमते हैं। उन्हें लगता है कि मां-बाप के पास जो भी है वो सब उनका ही है। लेकिन जैसे ही उनके हाथ खाली हुए वे मां-बाप से बेरुखी का व्यवहार करने लगते हैं। वे ये तक भूल जाते हैं, कि उनके अपने मां-बाप के प्रति क्या कर्त्तव्य है। आज के आपाधापी के जीवन में माना कि समय का अभाव है लेकिन इस पीढ़ी को अगर डिस्को के लिए समय निकालना पड़े तो निकल जाता है। परन्तु उनके पास अपने बूढ़े मां-बाप के पास बैठकर उनका हाल जानने के लिए समय नहीं है।'

जीसीजी-11 में प्रोफेसर के पद से रिटायर हुई मधु बहल का कहना है, 'हर घर में कोई न कोई वृद्ध जरूर होता है। कई बार उन्हें अपने ही घर में बेगाना-सा होकर जीना पड़ता है, जो कि उनके लिए बड़ी पीड़ाजनक बात है। उन्हें देखकर ऐसा लगता है जैसे कि वे बिस्तर पर पड़े-पड़े केवल मौत का इंतजार कर रहे हों। ऐसे में जिंदगी और भी दूभर हो जाती है जब उनमें से एक लाइफ पार्टनर चल बसता है। यदि घर में सब सदस्यों में प्यार, विश्वास और त्याग की भावना है तो वह घर स्वर्ग के समान है। लेकिन अगर घर में कलह क्लेश है तो इससे बड़ा कोई नरक नहीं है। इसलिए बच्चों को ये समझना चाहिए कि अगर मां-बाप सुखी और प्रसन्न रहेंगे तो उनकी स्वयं के सुख और शांति में भी वृद्धि होगी।'

सी.एल. मंडहार का मानना हैं कि, 'अगर बच्चों की बुजुर्गों के साथ अंडरस्टेंडिंग है तो दोनों का ही साथ में रहने में हित है लेकिन यदि बच्चे बुजुर्गों के साथ आदर से पेश नहीं आते और उन्हें बोझ समझते हैं तो मेरी राय में बुजुर्गों को जब तक उनका स्वास्थ्य ठीक है और फाइनेंशियल पोजीशन भी अच्छी है तो वे वहीं रहें जहां उनकी मूल जड़ें हैं। लेकिन बच्चों से दूर रहने पर भी उनसे भावनात्मक संबंध बनाए रखें और बीच-बीच में जाकर उनके पास अवश्य रहें। यदि इस तरह से चला जाए तो दोनों पीढ़ियां अपने ढंग से आज़ादी से जी सकती हैं।

-स्वर्ण गक्खड़

शुभ संग्राम

गोनियाना मण्डी :– 16 अक्टूबर सुबह 8.30 बजे की सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। परम पूजनीय भगवान देवात्मा के अद्वितीय धर्म कार्य का ब्यान करते हुए उन्होंने बताया कि यह धर्म हितकर कार्य कर रहा है। इससे मनुष्य का सब प्रकार से भला होता है। हर पक्ष में विकास होता है। शारीरिक भलाई, आर्थिक भलाई, मान्सिक भलाई और अध्यात्मिक भलाई इस अनुपम कार्य के द्वारा होती है। यह धर्म कार्य परम पूजनीय भगवान देवात्मा के प्रभाव कर रहे हैं। जिन देव शक्तियों के द्वारा यह कारज हो रहा है, वह किसी और में नहीं। नशों के प्रति उच्च घृणा इन्ही प्रभावों के द्वारा पैदा होती है। देवात्मा के कार्य की महिमा और नशों के प्रति घृणा पैदा करने के कार्य की बहुत सुन्दर तस्वीर पेश की गई।

16 अक्टूबर :– शाम की सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। इस सभा में बताया गया की भौतिक रोशनी कितनी मुबारक है। भौतिक अन्धेरा कितना खतरनाक है। हार्दिक अन्धेरा उससे भी बढ़कर हानिकारक है। इसको दूर करने के लिए देवात्मा की देव ज्योति की आवश्यकता है।

यह देव ज्योति मनुष्यों में वर्तमान नहीं, इस अन्धेरे में मनुष्य अपनी हानि करने के लिए मजबूर हैं। सब नीच सुखों के प्रेम अन्धेरा पैदा करके हानि करते हैं। स्वाद सुख, नशे सुख, काम अनुराग का सुख अन्ध ा बनाकर हानि करता है। देवात्मा की देव ज्योति में ही यह अन्धेरा नज़र आता है।

17 अक्टूबर सुबह 8.30 बजे :– सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि सौ प्रतिशत लोग आत्म बेसुधी में जी रहे हैं। मनुष्य को अपने परिचालक भावों का कुछ पता नहीं, इसलिए मनुष्य पथभ्रष्ट है। परलोक में कौन से उच्च भावों ने सहायक होना है, उसकी ओर से पूर्ण बेसुध हैं। परलोक में कोढ़ी होकर गल सड़कर खत्म हो जाएगा, क्या परिणाम होगा, उसकी कोई सुध पाना नहीं चाहता, कितना बड़ा मन्दभाग।

यमुना नगर :– 7 नवम्बर को श्रीमान बलदेव सिंह जी दोपहर बाद यहां पहुंचे और श्री ओम प्रकाश जी वर्मा के पास गए। वहां कुछ देर ठहरे और ओम प्रकाश जी को साथ लेकर सहारनपुर पहुँचे।

जाटोंवाला :– सहारनपुर से जाटोंवाला राकेश जी गुप्ता के बेहर रोड पर उनके घर पहुँचे। वह जाटोंवाला गए हुए थे, उसके बाद यह जाटोंवाला गए। उनके जोर देने पर वहां सभा करवाई गई, जिसमें बताया गया कि मनुष्य अपने चौतरफा विचारों में कैद रहता है। उन्हीं को ठीक जानता है और कोई पड़ताल करना नहीं चाहता। वैज्ञानिक कसौटीयों पर नहीं परखता। उनके विरूद्ध कुछ भी सुनने को तैयार नहीं होता। कसाई भी अपनी कमाई को दस नाखूनों की कमाई समझता है। वेश्वा अपने काम को ठीक समझती हैं। मांसाहारी उसको खुदा की नेहमत समझते हैं। मनुष्य अपने धर्म वा सम्प्रदाय को ठीक समझता है, इसके उदाहरण दिए।

आवश्यकता इस बात की है कि सेहत के नियम पूरे हों और मनुष्य स्वास्थ्य रहे। उसका दिमाग रोशन हो, उसके भीतर नीच भाव घटें और उच्च भाव पैदा हों। यदि ऐसा कुछ नहीं तो मनुष्य अन्धेरे में जीवन बर्बाद कर रहा है। सभा में पटवारी जी के 5 पारिवारिक जन, शोभाराम जी, रामकुमार जी के पारिवारिक जनों ने शामिल होकर लाभ उठाया।

8 नवम्बर :– सुबह फिर एक सभा रखी गई। इसमें भी उपरोक्त सब जन शामिल हुए। गुरु की कृपा से हम यह तो मानते हैं कि हम सब सुख अनुरागी

हैं, परन्तु यह नहीं मानते कि हम अपहरणकर्ता भी हैं। हम पराया हक मारते हैं, जो नज़र नहीं आता। हम सब हानिकारक जीव हैं। दूसरों के हकों का अपहरण करके खुशी मनाते हैं। दूसरों को दुख सन्ताप देकर उस पर अपनी खुशियों के महल उसारते हैं और अपने आपको धर्मवान समझते हैं। देवात्मा की रोशनी प्रर्याप्त मात्रा में मिले बिना अपना अपहरणकारी भेड़िया रूप नज़र नहीं आता। यह सभा बहुत प्रभावशाली सिद्ध हुई। सबने बार-बार आने की अपील की और अपना चन्दा अखबार आदि 1100 रू० खुशी-खुशी दिए। एक जन ने अपनी कुछ कमियों का भी ब्यान किया।

सहारनपुर :- यहां से यह पार्टी सहारनपुर श्री किशन सिंह जी चौहान के घर पहुँची। कुछ समय ठहरकर देव सुमन के बच्चों से बातचीत की।

कुआंखेड़ा :- दोपहर बाद यह पार्टी कुआं खेड़ा श्रीमान रतन सिंह जी के घर पहुँची। रात को एक सभा की गई, जिसमें बताया गया कि इन्सान छोटी-छोटी बातों में अपना जीवन बर्बाद कर देता है। उल्टा उसे कोई महान काम करना चाहिए। कई उच्च जनों की घटनाएं बताई गईं कि किस प्रकार उन्होंने अपना जीवन नेक कामों में लगाया, सेंट बरनार्ड शा व नाईटिंगेल आदि की घटनाएं बताई गईं।

एक सभा वहां और की गई, जिसमें पापों से बचे रहकर दीन और नम्र रहकर जो मनुष्य "तुम्हारी ज़रूरत मुझ से अधिक है" के नियम को जीवन में उतार सकें, उस पर हर समय अमल कर सकें तो मनुष्य का बहुत भला हो सकता है और 90 प्रतिशत धर्म भी आ जाता है। दूसरों की दूसरों पर न्यौछावर होने की घटनाएं सुनाई। बहुत अच्छा वातावरण बन गया। परिवार में मेल बनाए रखने के लिए हितकर बातचीत भी की जाती रही। इसका अच्छा प्रभाव पड़ा। इस प्रभाव से परिवार में कई फैसले सम्भव हो गए जो सबने स्वीकार कर लिए। 300 रूपये दान भी मिला। महोत्सव पर पहुँचकर लाभ उठाने की प्रेरणा की गई।

इसके बाद पार्टी वापिस चण्डीगढ़ पहुँच गई। रविवार की सभा चण्डीगढ़ में करवाई गई।

पदमपुर :- 15 नवम्बर को श्रीमान बलदेव सिंह जी चण्डीगढ़ से संगरूर होते हुए, कुछ नज़दीकी सम्बन्धियों को लेकर कल्याण पहुँचे, वहां 1□ घण्टा रुके। मन्दिर में जाकर प्रणाम किया। और श्रीमान बलबहादुर जी और रास्ते में श्रीमान सीताराम जी भी साथ शामिल हो गए। रात को यहां सभा की गई। यहां गजसिंह पुरा से एक साथी पहुँच गए। यहां सभा की गई जिसमें बताया गया कि सचमुच धर्म पाए बिना जीवन निष्फल जाता है। धर्म पाने के लिए उसकी कीमत चुकाने के लिए तैय्यार रहना चाहिए। कोई भी विश्वास धर्म नहीं होता। धर्म के लिए जीवन उच्च बनाना होता है। हम नीच हैं, मलिन हैं, बुरे हैं, यह सब दिखाई देना चाहिए। अपने नीच भाव दिखाई नहीं देते। न दूर होते हैं। देवात्मा ही मनुष्य का नीच रूप दिखा सकते हैं, वही उसको दूर भी कर सकते हैं। उनके प्रभावों में बैठकर, बार-बार बैठकर अपना रूप दिखाई देता है। यह सभा बहुत प्रभावशाली थी।

16 नवम्बर :- सुबह की सभा में बताया गया कि जो मशीनरी का ज्ञान नहीं रखता, वह उसे सम्भाल नहीं सकता। मनुष्य को अपनी आत्मिक मशीनरी का कुछ ज्ञान नहीं। मनुष्य अपनी इच्छाओं वा लालसाओं का कुछ ज्ञान नहीं रखता, इसीलिए मनुष्य जगह जगह पर टकराता है, दुखी होता है। उसे यह भी मालूम नहीं कि उसने इस सम्बन्ध में जानना क्या है? वह समझता है कि मेरे भीतर परमात्मा है उसका जप करता है। मनुष्य को धन, काम वासना, अहंकार, गुस्सा, स्वार्थ, मोह बन्धन बर्बाद कर रहे हैं। देवात्मा मनुष्य को उसके आत्मा की मशीनरी दिखाते हैं और नाना पक्षों में नाश से बचाते हैं। सभा में बहुत अच्छा वातावरण पैदा हुआ।

रात को फिर एक सभा की गई। इसमें भी अच्छी हाजरी थी। इसमें बताया गया कि दुनिया में धर्मों की भरमार है। धर्म साधनों की भरमार है। परन्तु घर घर दुख और नर्क है। पाप बढ़ रहे हैं। ठेके, मांसाहार, व्यभिचार और झगड़े फसाद बढ़ रहे हैं। इन्सान का जीवन कांटों से भरा हुआ है। उनको इस दुरावस्था से निकालने की आवश्यकता है। दूसरी तरफ उच्च भाव पैदा करने की आवश्यकता है। यह दोनों बातें देवात्मा के बिना और कोई नहीं दिखा सकता। इसके बिना संसार में सुख शान्ति नहीं आ सकती और न ही आत्मा का भला हो सकता है।

17 **नवम्बर** की सभा में भी 30 - 32 जन शामिल थे। इसमें बताया गया कि मनुष्य का लक्ष्य क्या है? मनुष्य का लक्ष्य है कि जिन्दा रहना और अधिक से अधिक समय तक जिन्दा रहना। उसको जिन्दा रखने के लिए उसकी जीवनी शक्ति का जिन्दा रहना आवश्यक है। जीवनी शक्ति के जिन्दा रहने के नियम और उसकी हानि और पतन से बचने के नियमों का जानना आवश्यक है। नीच अनुराग आत्मा के लिए घातक हैं। एक तरफ नीच अनुरागों से मुक्त होना आवश्यक है और दूसरी तरफ उच्च भाव पैदा करने आवश्यक हैं। उच्च भावों से आत्मा का विकास होता है। भला होता है। इस सभा में हाजरीन बहुत प्रभावित हुए।

रात की सभा में भी काफी हाज़री थी। भजन के बाद बताया गया कि मनुष्य को उसकी शक्तियां चलाती हैं। नीच सुखों के इश्क चलाते हैं तो बर्बादी आती है। मनुष्य ईश्वर का जाप करता रह जाता है, उसके नीच अनुराग उसका बेड़ा गर्क करके छोड़ते हैं। बहुत सारे उदाहरण देकर इस बात को समझाया गया।

18 **नवम्बर** की सभा में बताया गया कि विकास क्रम में देवात्मा अलौकिक हस्ति प्रगट हुए हैं। उन्होंने धर्म की दुनिया में नई रोशनी दी है। नये सत्य दर्शाए हैं। धर्म उच्च भावों के बिना नहीं आता। भाव हमारा आचरण बदल देते हैं। कृतज्ञता धर्म भाव है। इसके बिना कोई धर्म नहीं। कृतघ्न पापी होता है। जिसको उपकार कर्ज़े की तरह अनुभव नहीं होते, वह अन्धा है। कृतघ्न जनों के उदाहरण दिए गए। सभापति जी के भीतर कुछ अंश कृतज्ञता को पैदा किया, उसका ब्यान किया। सारा वातावरण हृदयों को आन्दोलित कर रहा था और गुरु महाराज के आगे दिल झुक रहे थे।

रात को फिर एक सभा की गई। इसमें सच्चे वैराग्य के विषय में बताया गया। घर बार, बीवी बच्चे त्यागना सच्चा वैराग्य नहीं। सम्बन्धों को तोड़ना और छोड़ना धर्म नहीं। सम्बन्धों में स्वर्ग पैदा करना धर्म है। गुरु महाराज स्वर्गीय सम्बन्ध पैदा करते हैं। वह अच्छे पुत्र, अच्छे बहन भाई और नेक पति पत्नी बनाते है। हाजरीन बहुत दिलचस्पी से सभा सुनते रहे।

19 तारीख रविवार की सभा सत्संग की आख़री सभा थी। इसमें विकास के नियम और देवात्मा के रूप को समझाने का यत्न किया गया। उनका निज का जीवन, उनकी शिक्षा, उनका कारज, उनका लक्ष्य अद्वितीय है, इस पर ब्यान किया गया। महोत्सव का निमन्त्रण दिया गया। 300 रू० दान प्राप्त हुआ। सभा में मिठाई बांटी गई। इस प्रकार यह सारा शुभ संग्राम सफल हुआ।

19 नवम्बर को श्रीमान बलदेव सिंह जी कल्याण पहुँचे। एक सभा की गई। गुरु महाराज का वह वचन कि जो गुरु महाराज की शरण में रहता है, वह पहले से बेहतर हो जाता है, जो दूर जाता है वह पहले से नीच बन जाता है। इस सचाई को महसूस करने की आवश्यकता है और अपनी सन्तान को भी सत्संग से जोड़ने की आवश्यकता है। महोत्सव मुबारक पर पहुँचने की पुरज़ोर प्रार्थना की गई।

एक सेवक

चण्डीगढ़ में माता - पिता सम्बन्धी सभा

7 जनवरी को माता - पिता सन्तान के सम्बन्ध में विशेष साधन का दिन था। उस दिन यह सभा डाक्टर खेड़ा साहिब के घर सैक्टर 35 - डी में श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई।

पहले एक भजन दत्त साहिब ने गाया। फिर सुन्दर हार के द्वारा पूजनीय भगवान देवात्मा की छवि का अर्चन किया गया। देव स्तोत्र का गान और व्याख्या श्रद्धा भाव से भरकर की गई। उसके उपरान्त इस सभा की सफलता के लिए सहाय - प्रार्थना की गई।

फिर श्रीमान जगदीश जी ने "श्रद्धा भाजन मात - पिता जी" नामक भजन का अच्छे भावों से भरकर गान किया।

इसके बाद श्रीमान जी ने बताया कि एक बार इब्राहिम लिंकन जी ने एक सूअर को जो दलदल में फंसा हुआ था, बड़ी कठिनाई से बाहर निकाला, आप कीचड़ से लथपथ हो गए। मानवता की हालत उस सूअर की तरह है, उसी प्रकार मनुष्य मात्र नीचता में गर्क हो रहा है। जैसे सूअर को न पहले पता था कि उसके साथ क्या होने वाला है और न बाद में पता लगा मुझे मर रहे को बचाया गया है। वह चीखता हुआ जंगल की ओर भाग गया। मनुष्य मात्र दुःख, क्लेश, अनर्थ की दलदल में गरक हो रही है, पर किसी को कोई होश नहीं।

नीच अनुराग मानवता को बर्बाद कर रहे हैं, पर उसे सूअर की तरह कुछ दिखाई नहीं देता। परम पूजनीय भगवान देवात्मा निराली रोशनी लेकर आए हैं, जिसमें वह मानवता को उसकी प्रकृत बर्बादी की हालत दिखाते हैं और उसमें से निकालते भी हैं।

मनुष्य को अपनी हालत का कोई बोध नहीं। सम्बन्धों में घोर नर्क है, क्लेश वा दूरी है। माता - पिता सताए व तड़पाए जा रहे हैं, उन पर जुल्म हो रहे हैं। सभापति जी ने बताया कि पूजनीय भगवान की शरण न मिलती तो हमने पशुओं की तरह रहना था। गंडा सिंह जी की तरह माता पिता को प्रणाम तक नहीं करना था। इतनी होश ही कहां रहनी थी। मैं तो मां को सताकर जल्लाद बन इस दुनिया से जाता। सभापति जी का ब्यान हृदय स्पर्शीय था। सभापति जी ने माता पिता की कुर्बानियों का ब्यान किया, किस प्रकार माता पिता बच्चों पर निस्सार होते हैं। लेकिन उनका उपकारी रूप नज़र नहीं आता, उनके विरूद्ध शिकायतों के दफ्तर खुले रहते हैं। इस बर्बरता की हालत से देवात्मा हमें निकालते हैं।

बड़ा भाव - पूर्ण वातावरण था। सभपति जी और कई उपस्थित जन आँसू बहा रहे थे। फिर उन्होंने हाजरीन को अपने माता पिता के उपकार ब्यान करने के लिए कहा।

एक विद्यार्थी बच्ची ने महसूस करके बोला कि मैं पापा के थोड़ा सा टोकने पर ऊँचा बोलने लग जाती हूँ।

एक और नौजवान, जिनका दिल भरा हुआ

था, सभापति जी के चरणों में प्रणाम करने के लिए मजबूर हो गए। फिर इसी प्रकार उन्होंने खेड़ा साहिब को प्रणाम किया।

सभापति जी ने 90 वर्षीय माता जी विद्यावती जी के सम्बन्ध में अपने गहरे सन्मान का प्रकाश किया।

फिर सौभाग्यवान सन्तान को जिनके माता पिता वहां उपस्थित थे, उनका अर्चन करके और उनके चरणों में प्रणाम करके सन्मान प्रदर्शन करने के लिए कहा गया। खेड़ा साहिब ने अपने माता जी के चरणों में प्रणाम किया। विनय जी और मोना जी ने अपने माता पिता का अर्चन किया। बाकी सन्तानों ने भी यह साधन किया, ऐसा प्रतीत होता था कि जैसे स्वर्ग धरती पर उतर आया हो।

सभापति जी ने एक-एक नौजवान को बार-बार कहकर प्रार्थना की कि वह अपने माता-पिता को हररोज़ प्रणाम किया करें। कई नौजवानों ने हाथ खड़े करके वायदा किया। जो माता पिता हाज़िर नहीं थे, उनके बच्चों को हार दिए गए, ताकि वह अपने घर जाकर अपना साधन कर सकें।

मोना जी ने अपने भाव लिखकर दिए :

<u>भाव प्रकाश</u>

इस सभा में बैठकर अपने ऊपर थोड़ा सा ध्यान गया तो पाया कि मम्मी पापा की मैं कितनी बुरी बेटी हूँ। पापा मम्मी मेरे लिए सब कुछ करते हैं और मैं उनकी खुशी का भी ध्यान नहीं रख पाती। सभा में बैठे-बैठे जैसे पूरी फिल्म ही सामने से गुजर गई और अहसास हुआ कि मेरा तो वजूद ही मेरे मम्मी पापा से हैं। सिर्फ मेरा ही नहीं मेरे बच्चे का भी आज वो सांस ले रहा है सिर्फ मेरे मम्मी पापा की वजह से। आज जो मैं इतनी अच्छी जिन्दगी ले पा रही हूँ, जो जगह मुझे सोसाईटी में मिली, मेरे प्रौफेशनल लाईफ में मिली, जिस मुकाम तक मैं पढ़ाई कर पाई, और सब कुछ सिर्फ मेरे मम्मी पापा की वजह से सम्भव हुआ। और दूसरी तरफ मैं, अपने आप में इतनी व्यस्त कि सोचने का ही समय नहीं मिलता। उनके उपकारों के लिए शुक्रिया क्या अदा करना था। आज मेरे मन में सिर्फ एक ही बात आ रही है कि मैं अपने इस पहलू पर जरूर ध्यान दूंगी और उनके उपकारों को हमेशा याद रखने की कोशिश करूंगी।

इस प्रकार इस सभा से सबने बहुत अच्छा लाभ उठाया और धन्य धन्य अनुभव किया। सबके दिल गुरु महाराज के प्रति झुक रहे थे। चार बार जय ध्वनि करके यह प्रभावशाली सभा समाप्त हुई।

(एक हाजरीन)

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, # 68, Shop No. 3, Badheri 41-D, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts